द्वितीय अध्याय

(अ) ' मोहन राकेश के उपन्यासों का रचना परिवेश '

(ब) युगीन परिवेश का मोहन राकेश के उपन्यासोंपर प्रभाव

(अ) मोहन राकेश के उपन्यासों का रचना परिवेश --

१ राजनीतिक परिस्थिति --

सन १७५७ में अंग्रेजों ने बंगाल जीत लिया । इस बीच उनका राज्य बाद में भारत में फैलता गया । उन्होंने अपने ढंग की शासन व्यवस्था तथा अर्थ व्यवस्था को लागू किया । राज - काज में सहयोग प्राप्ति के लिए भारत से सस्ते क्लर्क प्राप्ति के निमित्त उन्होंने स्कूल और कॉलेज खोले, छापखाने खुले तथा रेल-तार आदि का भी आविष्कार किया । यह सब ईस्ट इंण्डिया कम्पनी के द्वारा भारत में किया गया ।

सन १८५७ का प्रथम स्वतंत्रता युध्द इस काल की एक अन्य प्रमुखतम घटना है । भारतीय लोगों को लग रहा था कि ये अंग्रेज लोग हमारे भारत में आकर हमारे देश पर शासन कर रहे हैं । इस बीच ६ मई १८५७ में सारे भारत में अंग्रेजों के विरुध्द विद्रोह की भावना भड़क उठी । यही स्वतंत्रता की तरंग लगभग एक साल तक चलती रही । अंग्रेजी सेना के दमन और भारतीय राजा महाराजाओं के विश्वासघात से स्वाधीनता का प्रथम संग्राम असफल हुआ, जिसमें नाना साहब,बाँदा का नवाब,तात्या टोपे और झाँसी की रानी आदि वीर सेनानी काम आये ।

इस युग की राजनीतिक पृष्ठभूमि में ईस्ट इंण्डिया कम्पनी के राज्य की स्थापना हुई थी । प्रथम स्वतन्त्रता का असफल संग्राम, भारत में विक्टोरिया शासन की प्रतिष्ठा,इंण्डियन नेशनल कॉंग्रेस की स्थापना,बंग-भंग मोर्लो मिन्टो सुधार द्वारा साम्प्रदायिक निर्वाचन प्रणाली का उदय हो गया । जापान द्वारा रुस की पराजय,रौलेट एक्ट,जलियाँवाला हत्याकांड,गांधीजी का असहयोग आन्दोलन,स्वराज्य पार्टी की स्थापना हो गई । इस समय जिन्ना का मुस्लिम लीग में सम्मिलित होना,इसी बीच द्वितीय महायुध्द का आरंभ हो गया सन १९३६ में कॉंग्रेस मंत्रिमण्डलो का त्यागपत्र ,सन १९४० में पाकिस्तान की माँग

गई। इस समय क्रिप्स महोदय का भारत में आगमन हुआ। सन १९४२ में 'भारत छोडो' का आन्दोलन शुरु हुआ। १९४६ में अन्तरिम सरकार की स्थापना मुस्लिम लीग की घृणोत्पादक नीति के फलस्वरुप कलकत्ता, बिहार, और पंजाब में भयंकर सांप्रदायिक दंगे शुरु हुए। १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतंत्र हुआ।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद राजनीतिक चेतना अधिक व्यापक हुई। स्वाधीनता पूर्व भी जन मानस में इसका असर था। राकेश जी के जन्म के समय भारत अपनी परतंत्रता की बेड़ियों को तोड फेकने को उतावला हो रहा था। साम्प्रदायिक दंगो और देश विभाजन ने मूल्य हीनता का ऐसा आघात दिया जो मानवता के इतिहास में कलंक के रुप में याद किया जायेगा।

> 'आग, लहु, और क्रूदन इनकी पृष्ठभूमि में कुछ लोगों ने पहले पहल जिन्दगी को देखा। जो नजर आया, वह था जलता - सुलगता और धुआँ छोडता हुआ एक सत्य।'[१]

राजनैतिक क्षितिज पर बाल गंगाधर तिलक के बाद गांधीजी का उदय हो चुका था। सन १९२० में कांग्रेस की बागडोर गांधीजीने संभाली। सारा भारत गाँधीजी के व्यक्तित्व से प्रकाशित तथा उनकी वाणी से अनुप्राणित हो रहा था। यह जागरण शहरों एवं पढे लिखे लोगों तक ही सीमित नहीं था। अपितु ग्राम-ग्राम तक गतिमान हो रहा था। दूसरी ओर भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव और राजगुरु जैसे क्रांन्तिकारी प्राणों का उत्सर्ग कर स्वतंत्रता के सूर्य के स्वागत में रक्त का अर्घ्यदान दे रहे थे।

गाँधीजी ने हिन्दुओ और मुसलमानों को सम्मिलित करके असहयोग आन्दोलन आरंभ किया। इसमें विदेशी वस्त्रों, सरकारी नौकरी, कौंसिलों, न्यायालयों, कालेजों और उपाधियों का बहिष्कार कर दिया गया। कांग्रेस के कुछ सदस्य थे उसमें मोतीलाल नेहरु, लालालचपतराय, चंद्रशेखर आजाद आदि का

---

१ डॉ.धनानन्द एम.शर्मा - अदली - मोहन राकेश व्यक्तित्व एवं कृतित्व - पृ.३०।

असहयोग की नीति पर विश्वास नहीं था । इन्होंने स्वराज्य पार्टी नामक एक संस्था की स्थापना की । इसमें चितरंजनदास तथा मोतीलाल नेहरु का नाम उल्लेखनीय है । इसी समय मुहम्मद अली जिन्ना कॉंग्रेस को छोड़कर मुस्लिम लिग में सम्मिलित हो गये । सन १९२०-३० तक अंग्रेजी कूटनीति का दमन चक्र भी खूब चला । अंग्रेजों ने हिंदुओं और मुसलमानों के आपस में सांम्प्रदायिक दंगे होने लगे । यह एक अंग्रेज सरकार की चाल थी ।

भारत के जिस हिस्से का नाम पाकिस्तान रखा गया वहाँ से करोडों की संख्या में शरणार्थी आये । उन्होंने अपने ही हाथों खडे किये मकानों को जलते देखा । राकेश जी ने अपने किशोरावस्था में इस राजनैतिक उथलपुथलों को गहराई से देखा । सन १९४२ में आन्दोलन बडे सशक्त बन गये जिसके परिणाम स्वरुप सन १९४७ को भारत स्वाधीन हुआ पर इस स्वाधीनता का एक भीषण पहलू भी था वह था भारत का विभाजन । धर्म के नाम पर विशाल भारत भूमि के दो टुकडे हो पडे । धर्मांध हिंन्दुओं ने मुसलमानों ने अमानवीय रुप से एक-दूसरे का संहार किया । कहीं कहीं तो अबोध बच्चे और लाचार बूढों को भी मार डाला गया । भारत के इस विभाजन ने लाखों लोगों को अपने पुरखों की जमीन से उखाडकर कहीं और जाने को बाध्यकर दिया । इस दौरान धर्म के नाम पर जो हिंसा अनाचार और अमानवीय घटनाये घटी उन सभी ने लेखक के मानस पर बडा गहरा प्रभाव डाला ।

आजाद भारत के बारे में डॉ.अर्जुन चव्हाण ठीक ही लिखते हैं --

> आजादी के बाद का राजनीतिक परिवेश देखकर लगने लगा कि जन मानस की स्वतन्त्रता पूर्व की आकांक्षाये कुचलती जा रहीं हैं । आजादी तो मिली परन्तु उसके भोग का अधिकार राजनेताओं, पूँजिपतियों और नोकरशाहों ने अपने लिए सुरक्षित कर लिया और जनता के उत्थान के नाम पर शोषण का दृष्ट चक्र चलाकर मानवी जीवन खोखला कर दिया ।[१]

---

१ डॉ.अर्जुन चव्हाण - राजेंद्र यादव के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन : एक अनुशीलन- पृ.६९, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की पीएच.डी.उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध, सन १९९० ।

मारत की शासन व्यवस्था बदल चुकी है लेकिन शोषण का रुप अधिक मात्रा में तीव्र होता गया नेतागण, पुलिस पदाधिकारी, शासन के कार्यकर्तागण आदि सब लोग अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी बुरा कर्म करने के लिए तैयार हो गये ।

आजादी के पश्चात भ्रष्टाचार, रिश्वत, कालाबाजार, स्वार्थपरता ये राजनीति के अभिन्न अंग बन गये । धनीमानी लोग अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी करने के लिए अपना मानवतावादी धर्म बेचने लगे । अर्थ से देश में लोकतंत्र का नही तंत्र लोक का उदय हुआ । राजनीतिज्ञों का प्रमुख लक्ष्य लोगों की सेवा न रहकर सत्ता या कुर्सी सुरक्षित रखना हो गया ।

जन कल्याणकारी योजना के नाम पर नेताओंने स्वयं कल्याणकारी योजनाएँ बना ली । कल्याणकारी योजनाएँ लोगों तक पहुँच नहीं पायी । फलत: आम आदमी आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त हीन होकर दम तोड़ता हुआ दिखाई देने लगा ।

२ <u>आर्थिक परिस्थिति</u> —

सन १९५७ के पश्चात अंग्रेजों की शासन सत्ता मारत में अच्छी तरह से चल रही थी । इसी बीच मध्यकालीन सामन्ती व्यवस्था और संस्कृति का लोप होने लगा । अंग्रेज हमारे देश में न आते तो भी यह आर्थिक और सांस्कृतिक क्रांति हमारे देश में अवश्य होती । हमारे देश में व्यवसाय और उद्योग धन्धे काफी फैले हुए थे, किन्तु अंग्रेजों ने उन्हें नष्ट करके हमारी सामाजिक और आर्थिक उन्नति में महान आघात उपस्थित कर दिया । अंग्रेजो की कूटनीति थी कि मारत का आर्थिक शोषण करना था । इसकी पूर्ति के लिए एक ओर तो उन्होंने देशी उद्योग-धन्धों का समूल नाश किया और दूसरी ओर विदेशी पूँजी से मारत में नए उद्योग धन्धे स्थापित किए गये । शिक्षा का प्रचार भी विशाल साम्राज्य को चलाने के लिए सस्ते क्लर्कों के उत्पादन के निमित्त था ।

उनकी स्वार्थ-सिध्दि का यह चक्र उलट कर उनका राज्य नष्ट हो गया । मंहगाई, अकाल, टैक्स और दरिद्रता मारतेन्दु युग की प्रमुख समस्याएँ थी, जिनकी

प्रतिध्वनि तत्कालीन साहित्य में स्पष्ट है। कृषक वर्ग पर मालगुजारी का बोजा लादकर तथा जमींदारों के अत्याचारों को प्रश्रय देकर अंग्रेजों ने किसानों को अत्यधिक दीन हीन बना दिया। प्रथम महायुध्द के पश्चात कांग्रेस ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के द्वारा अंग्रेजों की औद्योगिक नीति तथा आर्थिक शोषण का विरोध किया। द्वितीय महायुध्द की समाप्ति के पश्चात भारत को विश्वव्यापी महँगाई और बेरोजगारी का शिकार होना पडा।

आजादी के बाद भारतीय समाज जीवन के आर्थिक परिवेश में काफी परिवर्तन आया। अर्थ जीवन का मूल्य बन गया। पैसा जिसके पास है उसको दुनिया सलाम करती है, उसी के आधार पर ही व्यक्ति का मूल्यांकन किया जाने लगा। कृषिप्रधान देश भारत का मशीनीकरण होता जा रहा है। सरल जीवन आर्थिक दबाव के कारण जटिल बना जा रहा है। ग्राम्य जन गाँवों को छोडकर अपनी आजीविका के लिए कस्बों नगर महानगरों में धँसते जा रहे है। वे अन्धी गलियों, गन्दी बस्तियों और फुटपाथों की यातना को भोग रहे हैं। आजादी के बाद समाज में आर्थिक सुधार, करने के उद्देश्य से भारत ने पंचवार्षिक योजनाएँ बना दी, समाजवादी समाज व्यवस्था का संकल्प किया। लेकिन सच्चाई यह है कि आजादी के बाद गरीब लगातार गरीब होता गया और अमीर अधिक अमीर होता गया।

भारत कृषि प्रधान देश है। आजादी के बाद कृषि में सुधार करने के प्रयास किये जाने लगे। परन्तु ये प्रयास अत्यन्त कम मात्रा में किये गये। सिंचाई की सुविधा तो आज भी सभी किसानों को उपलब्ध नहीं हुई है। कृषि उद्योग के लिए सिंचाई, यातायात, वैज्ञानिक तकनिक से बनाये हुये सभी साधन आदि से भारतीय किसान आज भी वंचित रहा है। फलत: किसानों की स्थिति बडी दयनीय हुई है। देश में आर्थिक समस्या अधिक जटिल हुई। डॉ. बालकृष्ण गुप्त के अनुसार देश का विभाजित होना इसका और एक प्रमुख कारण है -- वे लिखते है --

" देश के विभाजन से भारत की आर्थिक हानि ही नहीं हुई अपितु देश की आर्थिक समस्या और अधिक जटिल हो गयी । "[१]

सन १९६२ में चीन से तथा १९६५ और १९७१ में पाकिस्तान से हुये युध्द ने देश की आर्थिक दशा पर प्रतिकुल प्रभाव डाला । व्यक्ति और समाज विकास की जितनी भी योजनाएँ बनायी उनके लाभ से वे वंचित रहे ।

किन्तु ऐसा भी नही कि आजाद भारत की कोई उपलब्धि ही नहीं है । भूमि विकास के लिए आधुनिक साधन,कारखानों का निर्माण,रासायनिक खाद, रेल्वे इंजन,हवाई जहाज, पानी के जहाज,टेलिफोन,रेडिओ,टेलीविजन,बिजली, तेल,शिक्षा का प्रसार आजाद भारत की ही उपलब्धियाँ हैं । परन्तु बढती हुई जनसंख्या भ्रष्ट शासन व्यवस्था,बेकारी,पद लोलुपता,अनैतिकता,अपराध,महानगरों का विस्तार आदि के कारण स्वातंत्र्योत्तर भारतीय आर्थिक परिस्थिति में आशातीत वृध्दि नहीं हुअी । इसका दूसरा कारण यह भी है कि स्वतन्त्रता के पश्चात देश में उपभोक्त । संस्कृति विकसित हुअी जो कि अंग्रेजों की देन है । आदमी आरामतलब बनने लगा । वह हर नयी चीज का उपभोग लेने की कामना करने लगा । इससे भ्रष्टाचार,अनैतिकता और अमानवीयता को बढावा मिल गया । बहानेबाजी को बढावा मिल गया । समाज सेवा नेताओं के लिए जीविका का साधन बन गया । नेताओं ने समाज सेवा के बहाने अपनी आर्थिक स्थिति सुधार ली ।

फलत: यह हुआ कि अर्थहीन लोग और अधिक हीन हो गये और अर्थ संपन्न लोग और अधिक संपन्न हो गये । देश की बहुसंख्य जनता का जीवन अर्थ के अभाव में अर्थहीन हो गया । आर्थिक विषमता की जडे और अधिक मजबूत हो गई ।

---

१ डॉ.बाळकृष्ण गुप्त - हिन्दी उपन्यास सामाजिक संदर्भ - पृ.४३ ।

३ सामाजिक परिस्थिती --

आधुनिककालीन समाज सुधारकों में पहले पहल स्वामी रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द,अरविन्द आदि के नाम उल्लेखनीय है। राजा राममोहनराय ने ब्रहसमाज की स्थापना की। उनका उद्देश्य था समाज की कमियों,रुढियों परंपराओं को समाप्त करना। महाराष्ट्र में महादेव रानडे तथा डॉ.भांडार के नेतृत्व में प्रार्थना समाज की स्थापना हुई,जिनका उद्देश्य सामाजिक सुधार ही था। स्वामी दयानन्द ने ईसाई धर्म और प्रचार की प्रतिक्रिया में आर्य समाज की स्थापना की उनका व्यक्तित्व सामाजिक क्षेत्रों में क्रांतिकारी था। स्वामीजी के दो कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है -- राष्ट्रीयता का संचार और राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार। शिक्षा संस्थाओं के निर्माण द्वारा शिक्षा का प्रचार, नारी के प्रति आदर की भावना,निम्न-जातियों के प्रति अस्पृश्यता की भावना का निवारण,पुरातन रुढियों का परित्याग इन सब कार्यों के लिए भारतीय जनता इस समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द की सदा ऋणी रहेगी।

ऐनेबीसेन्ट जैसी विदेश नारी ने अपने आपको पूर्वजन्म की हिन्दू तथा हिन्दू धर्म को सर्वश्रेष्ठ माना। उन्होंने देश की राष्ट्रीयता को जागृत किया। इसने विज्ञान की अति बौध्दिकता का विरोध करके भारतीय आध्यात्मिकता का उत्थान किया।

स्वाधीनता प्राप्ति के साथ ही एक नया राजनीतिक परिवेश उत्पन्न हुआ,जिसने व्यक्ति और समाज के लिए एक विशिष्ठ परिस्थिति का निर्माण किया। सन १९४७ के बाद स्वातन्त्रता प्राप्त तो हुई पर धीरे धीरे स्वार्थी राजनीतिज्ञों का जो स्वरुप सामने आया उसने जन साधारण को सोचने को बाध्यकर दिया कि क्या इसीलिए हमें आजादी मिली थी। चारों ओर नैतिक अवमूल्यन अनास्था,स्वार्थ आदि का बोलबाला होने लगा। जातिगत भेदभाव मिटने की जगह बढने लगे। धर्मांधता के नाम पर साम्प्रदायिक दंगे बढने लगे।

धर्म के नाम पर जो अनाचार एवं लुट हो रही है ,उसने लेखक के जन मानस को गहराई से प्रभावित किया ।

दूसरी ओर देश का सारा तन्त्र कुछ तथाकथित अफसरों की फाइलों में बन्द होकर रह गया । इसी कारण देश में अराजकता,आलस,चोरबाजारी आदि का जाल फैलने लगा । एक सामान्य व्यक्ति की भूमिका देश में महत्व हीन हो गई । समाज बीसवी शताब्दी के अपेक्षित प्रभावों के कारण अपने पुराने मूल्यों से टूटकर बिखरता रहा । संयुक्त परिवारों का स्थान एकल परिवार ने लिया । पति पत्नी के दाम्पत्य सम्बन्धों को पुन परिभाषित करने की आवश्यकता पडी । एक ओर जन संख्या का भीषण विस्फोट हुआ । आज आदमी का जीवन दोहरी मार से टूटकर बिखरता गया । अर्थ तन्त्र और समाज तन्त्र के बीच झुलते विवश मानव की स्थिति बडी ही दयनीय हो उठी ।

राकेश जी ने युग की राजनैतिक सामाजिक पृष्टभूमि में जनसाधारण की इस स्थिति को गहराई से देखा परखा ही नहीं उसे गहराई से झेला भी ।

शिक्षित युवा पीढी आज बुरी तरह भटक गई है । उसके सामने कोई आदर्श नहीं है । शिक्षा के व्यापक प्रसार ने समाज में स्थित वैवाहिक जीवन की दृढ मान्यतायें और परम्परागत बन्धन शिथिल कर दिये हैं । अब अन्तर्जातीय विवाह,प्रेम विवाह, तथा विधवा विवाह भी होने लगे हैं । शिक्षा की सुविधा ने नारी का नया रुप प्रस्तुत किया है । डॉ.आशा बागडी ठीक ही लिखती हैं --

> " स्वतंत्र भारत में स्त्रियों के उपयुक्त बहुत से ऐसे पेशे हैं जिनमें स्त्रियाँ आसानी से अर्थोपार्जन कर सकती हैं देश में शान्ति होने से स्त्रियों को कोई भय नहीं । अब उनको अपनी रक्षार्थ किसी पुरुष का आलम्बन उतना आवश्यक नहीं जितना मध्यकाल में था । " [१]

---

१ डॉ.आशा बागडी - प्रेमचन्द परवर्ती उपन्यास साहित्य में पारिवारिक जीवन - पृ.८० ।

आजादी के बाद स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के नये दायरे स्पष्ट हुये हैं। पति-पत्नी के बीच स्वच्छन्दता की प्रवृत्ति बढती जा रही है।

स्वातंत्र्योत्तर समाज जीवन के रहन-सहन, आचार-विचार और व्यवहारों में काफी परिवर्तन आया है। गाँव के शिक्षित युवक शहर के मायावी आकर्षणों से आकर्षित होकर नौकरी की तलाश में महानगरों की ओर भाग रहे हैं। लेकिन नौकरी न मिलने के कारण या तनखा कम मिलने के कारण अत्यधिक व्यवसाध्य महानगरीय जीवन जीना उसके लिए बडा कठिण होता है। महँगाई, बेकारी, भौतिक सुखों की लालसा उसे तनावपूर्ण और घुटन भरी जिन्दगी जीने को विवश कर देती है। धन और पद की स्पर्धा ने आजादी के बाद मनुष्य के जीवन को यांत्रिक बना दिया। व्यक्ति अपने ही भीतर - बिखराव महसूस कर रहा है। उसका मन, उसकी चेतना, उसकी आकांक्षायें, उसके सपने, उसका स्व और उसका सब कुछ बिखरता जा रहा है।

आजादी के पूर्व व्यक्ति ने, समूह ने, समाज ने और सम्पूर्ण देश ने जो सपने देखे थे वे टूट गये, जो बनना चाहा था वह बिगड गया, जो समेटना चाहा था वह बिखर गया स्वातंत्र्योत्तर समाज जीवन में बिखराव ही बिखराव दिखाई देता है।

धार्मिक परिस्थिति --

आजादी के पहले की धार्मिक परिस्थिति कोई विशेष उन्नत नहीं थी। हमारे देश में जब-जब भी विदेशी लोग आ गये और यहाँ राज्यकर्ता बन गये तब तब उन्होंने अपने राज्य के साथ अपने धर्म का प्रचार करने सम्य कभी-कभी उन्होंने जबरदस्ती भी कर दी। जब मुसलमान लोग भारत में आ गये और यहाँ शासन करने लगे तो उन्होंने अपने राज्य के साथ अपने धर्म का प्रचार भी किया हुआ इतिहास बतलाता है। मुसलमान शासक औरंगजेब ने तो हिंदुओंपर धर्मपरिवर्तन के लिए जो आत्याचार किये वे अकल्पनीय थे।

मुसलमान शासकों के बाद अंग्रेजी शासन का काल शुरु हुआ। अंग्रेजी शासन काल में भी हिंदु धर्मियोंपर कम अत्याचार नहीं हुए। अंग्रेजों ने अपने इसाई धर्म प्रचार हेतु यहाँ मदरसे खोले, अस्पताल खोले, शिक्षा की सुविधाएँ उपलब्ध करा दी। उद्देश्य यह था कि इनके माध्यमों से वे अपने धर्म का प्रचार भारत में कर देना चाहते थे। यहाँ के निर्धन लोग अंग्रेजों की इस सुविधाजन्य स्थिति से प्रभावित होकर धर्मान्तर करने के लिए विवश हुए।

परंतु जब जबरदस्ती से धर्मान्तर करा लिया जाने लगता है तो उसका विरोध होना स्वाभाविक है। सन १८५७ का पहला असफल संग्राम जो छिड गया उसका तात्कालिक कारण धार्मिक ही था। अंग्रेजी सेना में यहाँ के जो हिंदू और मुसलमान नौकरी करते थे उनको जो काडतुसे अंग्रेजों द्वारा दी जाती थी उनके सिल को गाय और सुअर की चरबी लगाई जाती थी। काडतुसों के सिल सैनिकों को अपने दाँतों से तोडने पडते थें परन्तु हिन्दु और मुसलमान सैनिकों को इसबात का पता चलते ही बहुत ही क्रोध आया और उन्होंने अंग्रेज अफसरोंपर गोलीयाँ चलाई। क्योंकि अपने धर्म को भ्रष्ट करते वे देख नहीं सकते थे। आजादी की लंबी लडाई के उपरांत हमें सफलता मिली। स्वतंत्र भारत की महत्वपूर्ण उपलब्धि है भारतीय संविधान। जब भारतीय संविधान बनाया गया तो भारत को संविधान में धर्म निरपेक्ष राष्ट्र माना। क्योंकि भारत में हिंदू, मुसलिम, सिख, इसाई, बौध्द आदि अनेक धर्म के लोग रहते थे। संविधान ने इसीलिए देश का कोई एक धर्म न मानकर धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र मान लिया। सरकार सभी धर्म को समान निगाह से देख ने लगी। किसी के प्रति अतिप्रेम या किसी की उपेक्षा यहाँ की सरकार नहीं कर सकती। भारत का अपना न कोई राजकीय धर्म है, न किसी धर्म के प्रति पक्षापात किया जाता है। देश के हर नागरिक को अधिकार है कि वह चाहे जिस धर्म को माने और उसके अनुसार विधि-विधान तथा पूजा - पाठ करें। सरकारी शिक्षण संस्थाओं में किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा नहीं दी जा सकती है। भारत सरकार इस धर्म - निरपेक्षता की संकल्पना का पालन भी कर रही है।

भारत को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र संविधान में तो बतलाया परंतु आजादी के

बाद का इतिहास इस बात का साक्षी है कि धर्म के बन्धन शिथिल होने के बजाये और भी कड़े हो गये हैं धर्मान्धता के कारण ही आजादी के समय हिंदुस्थान का भारत और पाकिस्तान के रूप में विभाजन हुआ था। अंग्रेजो ने हिन्दू मुसलमानों के बीच 'फुट डालो और राज करो' का कटु बीज बोया था। दुर्भाग्य वश भारतवासी इसको समझ नहीं पाये। आजादी के चालीस साल बाद भी धर्म के नाम पर दंगे होते हुए दिखाई देते है। यद्यपि भारत को धर्म निरपेक्ष राष्ट्र बतलाया है परन्तु आजादी के बाद समय समय पर धार्मिक दंगे होते ही रहे हैं। गांधीजी ने जो मानव धर्म का सपना देखा था वह आज तक साकार नहीं हो पाया है। देश की इस तरह की धार्मिक स्थिति के प्रभाव से राकेश भी बच नहीं पाये। इस धार्मिक परिस्थिति का प्रभाव मोहन राकेश के उपन्यासों पर भी पड़ा हुआ मिलता है।

ब) <u>युगीन परिवेश का मोहन राकेश के उपन्यासों पर प्रभाव —</u>

राकेश का बचपन पराधीन भारत में बीता था। यह वह काल था जिसमें सारा देश आजादी के आंदोलन में कूद पड़ा था और स्वाधीनता का सपना देख रहा था। आखिर १५ अगस्त १९४७ में आजादी मिल गई। सब का सपना साकार हुआ, किन्तु इसी के साथ देश की परिस्थितियाँ दिनों - दिन बदलती चली गई। मोहन राकेश का लेखन स्वाधीन भारत में वे फलता-फूलता गया। राकेश ने अपने उपन्यासों में देश की बदलती राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक परिस्थितियों को सच्चाई के साथ अंकित किया है।

राकेश ने वर्तमान कालीन राजनीति, राजनीति में आयी स्वार्थी मनोवृत्ति, दिल्ली जैसे महानगर की जिन्दगी आदि को 'अँधेरे बंद कमरे' में रेखांकित किया है। इस उपन्यास में लेखक ने एक ओर स्वातंत्र्योत्तर कालीन देश की तथा दिल्ली जैसे महानगर की जिन्दगी को रेखांकित किया है तो दूसरी ओर हरबंस और नीलिमा के अंतर्द्वन्द्व के साथ साथ मधुसूदन तथा सुषमा श्रीवास्तव की जीवन कहानी को प्रकट किया है। राकेश स्वयंम कहते है कि इसे

" दिल्ली का रेखाचित्र अथवा पत्रकार मधुसूदन की आत्मकथा
अथवा हरबंस और नीलिमा के अन्तर्द्वन्द्व की कहानी " [१]

इबादत अली की इकलौती लड़की धन के अभाव में निकाह नहीं कर पाती और वह घर छोड़कर चली जाती है। ठकुराइन को न चाहते हुए भी आर्थिक संकट के कारण अपनी जवान बेटी को लोगों के घर काम करने के लिए भेजना पड़ता है।

इस उपन्यास में लेखक ने बदली हुई परिस्थितियों के परिवेश में दाम्पत्य जीवन, नारी की स्वच्छंदता वर्तमानकालीन पत्रकारिता, राजनेताओं तथा अफसरों की चाले, महानगर की दमघोंटू जिंदगी आदि के रुप में हमारे संपूर्ण समाज को ही प्रकट किया है। राकेश का यह उपन्यास अपने युगीन परिस्थितियों के प्रभाव की उपज है।

' न आनेवाला कल ' में लेखक ने वर्तमानकालीन शिक्षा व्यवस्था तथा दाम्पत्य जीवन की असगतियों को चित्रित किया है। इस उपन्यास के नायक मनोज की पत्नी शोभा वर्तमानकालीन आधुनिक नारी का प्रातिनिधिक पात्र है किन्तु आधुनिकता के नाम पर ऐसी नारियाँ अपनी बरबादी का कारण स्वयं बन जाती हैं। दमघोंटू स्कूल के वातावरण में मनोज जैसे स्वाभीमानी अध्यापक रह नहीं सकते। उनको त्यागपत्र ही देना पड़ता है। आज की सामाजिक परिस्थिति में विधवाओं के विवाह भी हो रहे हैं। इस उपन्यास की शोभा ने मनोज के साथ, अपने प्रथम पति की मौत के बाद विधवा हो जाने पर दूसरा विवाह किया हुआ दिखाई देता है किन्तु वह आधुनिकता की हवा में उड़ती रहती है और दूसरे पति का त्याग करके फिर अपने पिता के यहाँ लौट जाती है। मोहन राकेश ने इस रचना में अपने काल की सामाजिक, शैक्षिक तथा पारिवारिक परिस्थितियों का सच्चाई के साथ चित्रण किया है।

---

१ मोहन राकेश - अँधेरे बंद कमरे - पृ.७।

मोहन राकेश अपने समय के साथ आगे बढनेवाले उपन्यासकार हैं। `अंतराल` उपन्यास में उन्होंने नायक कुमार तथा नायिका श्यामा के माध्यम से वर्तमानकालीन स्त्री-पुरुष के बीच परिस्थितियों के प्रभाव स्वरुप किस तरह अंतराल बना रहता है,इसको प्रकट किया है। इस उपन्यास की नायिका श्यामा विधवा है। शादी के केवल डेढ साल बाद ही उसे विधवा होना पडा था। वह नौकरी भी करती है। वह सास ननद और बच्ची का पेट भी पालती है। वह परिश्रमी नारी है। एम.ए.करके लेक्चरर बनना उसका सपना है। इसी सिलसिले में वह कुमार के सम्पर्क में आती है, उनके मार्गदर्शन में अध्ययन शुरु करती है और अंतर मन से उनके करीब जाती है। कुमार और श्यामा एक - दूसरे को अंतर मन से चाहने लगते हैं। परंतु जटिल परिस्थितियों के फल : स्वरुप दोनों हमेशा - हमेशा के लिए एक-दूसरे के नहीं हो सकते और दोनों के बीच का `अन्तराल` मिट नहीं जाता। इस उपन्यास में बम्बई जैसे महानगर का चित्रण भी राकेश ने पर्याप्त मात्रा में किया है।

निष्कर्ष --

निष्कर्ष के रुप में यह कहा जा सकता है कि युगीन परिवेश का राकेश के उपन्यासों पर गहरा प्रभाव दिखाई देता है। `अँधेरे बंद कमरे` में राकेश ने एक ओर दिल्ली जैसे महानगर की जिंदगी को रेखांकित किया है तो दूसरी ओर हरबंस और नीलिमा के अंतर्द्वन्द्व के साथ साथ मधुसूदन तथा सुषमा श्रीवास्तव की जीवन कहानी को प्रकट किया है। इबादत अली की इकलौटी बेटी धन के अभाव में निकाह नहीं कर पाती और वह घर छोडकर चली जाती है। ठकुराइन को न चाहते हुए भी आर्थिक संकट के कारण अपनी जवान बेटी को लोगों के घर काम करने के लिए भेजना पडता है। इसी उपन्यास में पालिटिकल सेक्रेटरी हरबंस को तिगुणा वेतन देकर खरीदना चाहता है।

`न आनेवाला कल` राकेश जी का दूसरा उपन्यास है। इस उपन्यास में शिमला कान्वेण्ट स्कूल के हेडमास्टर मिस्टर विल्सलर के आतंक से तंग आकर मनोज सक्सेना नौकरी का त्यागपत्र देता है। इस उपन्यास में एक ओर

वर्तमानकालीन शिक्षा व्यवस्था तथा स्कूल का दमघोंटू वातावरण आदि पर तीखा व्यंग्य किया है,तो दूसरी ओर दु:खमय दाम्पत्य जीवन को स्पष्ट किया है। 'अंतराल' उपन्यास में राकेश ने नायक कुमार तथा नायिका श्यामा के माध्यम से वर्तमानकालीन स्त्री-पुरुष के बीच परिस्थितियों के प्रभाव स्वरुप किस तरह अंतराल बना रहता है, इसको प्रकट किया है। जटिल परिस्थितियों के फल स्वरुप दोनों के बीच का अंतराल मिट नहीं जाता। इस तरह राकेश के उपन्यासों में वर्तमानकालीन सामाजिक,आर्थिक,राजनैतिक,तथा शैक्षिक वातावरण का गहरा प्रभाव पडा हुआ दिखाई देता है।

अंतत: कहा जा सकता है कि युगीन परिवेश का राकेश के उपन्यासों पर गहरा प्रभाव है। उनका उपन्यास साहित्य अपने काल की परिस्थितियों का जीवंत दस्तावेज है।